Sahitya Manthan

A Peer-Reviewed, Open Access e-journal

ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in

Year-2, Issue-5, Continuous Issue-11, January - February 2022

नाथ सम्प्रदाय सामान्य परिचय

प्रास्ताविक-

नाथ सम्प्रदाय अवधूत सम्प्रदाय है- जिसका अर्थ होता है, "स्त्री रहित या माया प्रपंच से रहित" ये कहा गया है, कि जो सभी तरह के प्रकृतिजन्य विकारों को त्पत्याग देता है, वो 'अवधूत' है। नाथ संप्रदाय भारत में सर्वाधिक प्रचलित भक्ति पन्थ हैं। समाज के सभी वर्ग समूहों में इनके प्रति आदर एवं आकर्षण दोनों ही दिखाई देता है। महादेव शिव इस संप्रदाय के आदि गुरु एवं आराध्य माने जाते है । यह हठयोग की साधना पद्धति पर आधारित पन्थ है। मध्यकाल से उदित इस संप्रदाय में बौद्ध, शैव तथा भारतीय योग परंपराओं का संमिश्रण दिखाई देता है। नाथ संप्रदाय निखिल भारत में बिखरा हुआ था, गुरु गोरखनाथ ने संप्रदाय को और संप्रदाय की योग विद्याओं को एकरूप कीया, अतः इसके संस्थापक गोरखनाथ माने जाते हैं । पश्र्चिम उत्तरप्रदेश में संन्यासीओं को संन्यासी, योगी, जोगी, नाथ, अवधूत,कौल,कालबेलिया, उपाध्याय आदि नामों से जाना जाता हैं। इस संप्रदाय में अनेक गुरु हुए जिनमें गुरु ,मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरखनाथ सब से ज्यादा प्रसिद्ध है।

नाथ शब्द की व्युतपत्ति- संस्कृत साहित्य में 'नाथ' पद का अर्थ नाथ ऐश्वर्ये धातोः नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः सूत्रेण अच् प्रत्ययः। होकर नाथति ईश्वरो भवतीति। अर्थात् ऐश्वर्यवान् इस प्रकार होता है। नाथ यानि अधिपति, स्वामी ऐसा भी अर्थ होता है।

पंथ का प्रारम्भ –

जब तांत्रिकों और सिद्धों के चमत्कारों के साथ अन्य क्रियाकलाप भी बदनाम होने लगे, वे मांस, मदिरा, तंत्र और स्त्री-सम्बन्धी आचारों के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा खोने लगे थे, उनकी यौगिक क्रियायें मंद पडने लगी थीं, तब इन यौगिक क्रियाओ के उद्धार के लिए नाथ संप्रदाय का आविर्भाव हुआ। सिद्धों के महासुखवाद के विरोध में

नाथ पन्थ का उदय हुआ।इसमें नवनाथ प्रमुख कहे जाते है। इनका क्षेत्र भारत का पश्चिमोत्तर भाग है। इन्होंने सिद्धों द्वारा अपनाये गये पंचमकारों का नकार किया । नारी भोग का विरोध किया । इन्होंने बाह्याडंबरो तथा वर्णाश्रम का विरोध कर योगमार्ग तथा कृच्छ्र साधना का अनुसरण किया। ईश्वर को घट घट वासी मानते हैं। ये गुरु को ईश्वर मानते हैं। नाथ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गोरखनाथ हैं। इनकी रचनायें गोरखबाणी नाम से प्रसिद्ध है।

नाथ संप्रदाय की शाखाएँ -

यह संप्रदाय 12 शाखाओं में बंटा हुआ है-इसे बारह पंथ भी कहते है,इस कारण इसे "बारह पंथी योगी" भी कहा जाता है। सभी पंथ किसी एक पौराणिक देवता अथवा सिद्ध योगी को अपना आदि प्रवर्तक मानता हैं ।

इन पंथो के नाम इस प्रकार है-

(1) सत्यनाथ पंथ

(2) धर्मनाथ पंथ

(3) राम पंथ

(4) श्र्वरी पंथ

(5) कंथड पंथ

(6) कपिलानी पंथ

(7) वैराग्य पंथ

(8) माननाथ पंथ

(9) आई पंथ

(10) पागल पंथ

(11) ध्वजनाथ पंथ

(12) गंगानाथ पंथ

बाद मैं और भी पंथ इसमें जुडते चले गए । महार्णव तन्त्र के मुताबिक नवनाथ

ही 'नाथ' संप्रदाय के मूल प्रवर्तक हैं। नवनाथों की सूची विभिन्न ग्रन्थो में भिन्न भिन्न मिलती है- आदिनाथ, आनंदिनाथ, करालानाथ, विकरालानाथ, महाकालनाथ, कालभैरवनाथ,ब्र्टुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ और
श्रीकान्थनाथ, नौ नाथ गुरु भी माने गए हैं- मछेन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालंदरनाथ, नागेशनाथ,भर्तरीनाथ,चर्पटीनाथ,कानीफनाथ,गहनीनाथ,रेवननाथ।
इन नाथ योगियों में प्रथम नाथ आदिनाथ को माना गया,जो स्वयं शिव है जिन्होंने हठयोग की विद्या प्रदान की जो राजयोग की प्राप्ति में सीढी के समान है।

इसके अलावा यें भी हैं- 1.आदिनाथ 2. मीनानाथ 3.गोरखनाथ 4.खपरनाथ 5.सतनाथ 6.बालकनाथ 7.गोलकनाथ 8.बिरुपक्षनाथ 9.भर्तृहरिनाथ 10. अईनाथ 11. खेरचीनाथ 12. रामचन्द्रनाथ
ओंकारनाथ, उदयनाथ, सन्तोषनाथ,अचलनाथ,गजबेलीनाथ,ज्ञाननाथ,चौरंगीनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ और गुरु गोरक्षनाथ। सम्भव है यह उपर्युक्त नाथों के ही दूसरे नाम है। बाबा शिलनाथ, दादाधूनीवाले, गोगा नाथ,पंढरीनाथ और श्री स्वामी समर्थ, गजानन महाराज को भी नाथ परंपरा का माना जाता है। भगवान भैरवनाथ भी नाथ संप्रदाय के अग्रज माने जाते हैं। इन्हे विशेष रूप से योगी एवं जोगी भी पुकारा जाता है। एसा कहा जाता है कि देवो के देव महादेवजी स्वयं शिवजीने नवनाथों को खुद का नाम जोगी दिया हैं। इन्हें तो नाथो के नाथ नवनाथ भी कहा जाता हैं।
नाथ संप्रदाय में संन्यास दीक्षा-
इस संप्रदाय में किसी भी प्रकार का भेद-भाव आदि काल से नही रहा है। इस संप्रदाय को किसी भी जाति,वर्ण व किसी भी उम्र में अपनाया जा सकता है। संन्यासी का अर्थ काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि बुराईयों का त्याग कर सारें संसार से मोह छोडकर शिवभक्ति में समाधि लगाकर लीन होना बताया जाता है। प्राचीन समय में राजा- महाराजा अपना राजपाठ छोड संन्यास इसी लिए धारण करते थे ताकि अपना बचा हुआ जीवन सांसारिक परेशानियों को त्यागकर साधुओ

की तरह जी शके। नाथ संप्रदाय को अपनाने के बाद 7 से 12 साल की कठोर तपस्या के बाद ही संन्यासी को दीक्षा दि जाती थी। विशेष परिस्थतियों में गुरु अनुसार कभी भी दीक्षा दि जा सकती है। दीक्षा देने से पूर्व वा बाद में दीक्षा पानेवाले को उम्र भर कठोर नियमों का

पालन करना होता है। वो कभी किसी राजा के दरबार में पद नहीं प्राप्त कर सकता, वो कभी किसी राजदरबार में या राज घराने में भोजन नहीं कर सकता किन्तु राज दरबार वा राजा से भिक्षा जरूर प्राप्त कर सकता है। हर सांस के साथ मन में 'आदेश' शब्द का जाप करना होता है, किसी अन्य नाथ का अभिवादन भी 'आदेश' शब्द से ही करना होता है। संन्यासी योग व जडी-बूटी से किसी का रोग ठीक कर सकता है, पर बदले में वो रोगी या उसके परिवार से भिक्षा में सिर्फ अनाज या भगवा वस्त्र ही ले सकता है। वह रोग को ठीक करने के एवज में किसी भी प्रकार के आभूषण,मुद्रा आदि न ले सकता है और न इसका संचय कर सकता है। सांसारिक मोह को त्यागना पडता है। दीक्षा देने के बाद संन्यासी,जोगी,बाबा के दोनों कानों में छेद किये जाते है और उनमें गुरु द्वारा ही कुण्डल डाले जाते है। जिन्हें धारण करने के बाद निकला नहीं जा सकता। गोरखनाथ ने कर्णछेदन की परंपरा प्रचलित की थी कान फाडने के लिए तत्पर होने का मतलब – कष्ट सहने की शक्ति,

दृढता और वैराग्य की ताकत का होना। गोरखनाथ ने अपने अनुयायी शिष्यों के लिए ये कठोर प्रथा नियत की थी। कान फडाने के बाद मनुष्य बहुत से सांसारिक झंझटों से बचता है। हालांकि लंबे समय तक परीक्षा करने के बाद ही कान फाडे जाते हैं,अब भी ऐसा ही होता है। बिना कुण्डल के किसी को योगी,जोगी,बाबा, संन्यासी नहीं माना जा सकता । ऐसा संन्यासी जोगी जरुर होता है परन्तु उसे गुरु द्वारा दीक्षा नहीं दि गई होती। इसलिए उन्हें अर्ध संन्यासी के रूप में माना जाता है।

जीवन शैली-

नाथ साधु संत परिव्राजक होते हैं। वे भगवा रंग के बिना सिले वस्त्र धारण

करते हैं। ये योगी अपने गले में काली ऊन का एक जनेऊ रखते हैं जिसे ' सिले' कहते हैं। गले में एक सींग की नादी रखते है, इन दोनों को
' सींगी सेली' कहते हैं। उनके एक हाथ में चिमटा, दूसरे हाथ में कमंडल, दोनों कानों में कुण्डल, कमर में कमरबंध होता है। ये जटाधारी होते हैं।
नाथपन्थी भजन गाते हुए घूमते हैं और भिक्षाटन कर जीवन यापन करते हैं। उम्र के अंतिम चरण में वे किसी एक स्थान पर रूककर अखण्ड धूनी रमाते हैं। कुछ नाथ साधक हिमालय की गुफाओं में चले जाते हैं।

साधना-पद्धति-

इस सम्प्रदाय में सात्विक भाव से शिव की भक्ति की जाती है। वे शिव को 'अलख' (अलक्ष) नाम से पुकारते हैं। ये अभिवादन के लिए 'आदेश' या 'आदिश' शब्द का प्रयोग करते हैं। अलख और आदेश शब्द का अर्थ प्रणव या परम पुरुष होता है। नाथ साधु-सन्त हठयोग पर विशेष बल देते हैं।

सिद्धों और नाथों में भेदः-

सिद्ध अनीश्वरवादी थे, जबकि नाथ ईश्वरवादी। सिद्ध नारी भोग में विश्वास करते थे जबकि नाथपन्थी उसके विरोधी थे। गुरु
महिमा,पिण्ड-ब्रम्भाण्डवाद तथा हठयोग नाथ पन्थ का वैशिष्टय हैं। नाथों ने निरीश्वरवादी शून्य को ईश्वरवादी शून्य में प्रतिष्ठित किया। 8वीं सदी में 84 सिद्धों के साथ बौद्ध धर्म के वज्रयान की परम्परा का प्रचलन हुआ। ये सभी भी नाथ ही थे।

सिद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अनुयायी सिद्ध कहलाते थे।

विशेषताएँ-

इसमें ज्ञान निष्ठा को पर्याप्त महत्व प्रदान किया गया है।

इसमें मनोविकारों की निन्दा है।

सिद्धों के भोगविलास की भत्सना की गई है।

गुरु को विशेष महतत्त्व प्रदान किया गया है।

इसमें हठयोग का उपदेश प्राप्त होता है।

मन, प्राण,शुक,वाक् और कुण्डलिनी-इन पाँचो के संयमन के तरीकों को राजयोग,हठयोग व ज्रयान,जपयोग या कुंडलीयोग कहा जाता है।

इसमें भगवान शिव की उपासना उदात्ता के साथ मिलती है।

नाथ साहित्य में साधनात्मक शब्दावली का प्रयोग भी बहुलता से मिलता है।

किन प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है उल्लेख-

नाथ संप्रदाय का उल्लेख विभिन्न क्षेत्र के ग्रन्थों में मिलता है,जैसे –योग(हठयोग),तंत्र (अवधूत मत या सिद्ध मत),आयुर्वेद (रसायन चिकित्सा) और बौद्ध अध्ययन में दिखाई देता है। हठप्रदीपिका के लेखक स्वात्माराम और इस ग्रन्थ के प्रथम टीकाकार ब्रह्मानन्द ने हठप्रदीपिका ज्योत्सना के प्रथम उपदेश में 5 से 9वें श्लोक में 33 सिद्धनाथ योगियों की चर्चा की है। शाबरतंत्र में कपालिकों के 12 आचार्यों की चर्चा मिलती है। आयुर्वेद ग्रन्थों में नाथ सिद्धों की चर्चा रसायनचिकित्सा की उत्पत्ति करने वाले के रूप में होती है। जिन्होंने इस शरीर रूपी साधन को जो मोक्ष का माध्यम है उसके लिए रसायन चिकित्सा,पारद और अभ्रक आदि रसायनों की उपयोगिता सिद्ध की। नव नाथों ने ही तंत्र ग्रन्थो की रचना की। इनके बारे मेँ कहा गया है कि ये नाथसिद्ध कालजयी होकर ब्रह्भाण्ड में विचरण करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचिः

1. काव्यसुधा – रमेश,गौतम,प्रभा,रचना सिंह-वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली.
2. भारतीय साहित्य- गौतम मूलचंद राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली.
3. अपभ्रंश भाषा और साहित्य- शर्मा राजमणि भारतीय ज्ञानपीठ.
4. हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास-हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन.

5. हिन्दी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन- रामछबीला त्रिपाठी वाणी प्रकाशन.
6. बौद्ध दर्शन, दर्शन दिग्दर्शन- राहुल सांकृत्यायन

प्रो. डो. जसुबहन एम.परमार
सरकारी विनयन कोलेज,उच्छल,
तहसिल-उच्छल जि.तापी,गुजरात
394375
मो.9824975745